Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 6.471
Volume - 6, Issue - 4, April - 2023 Publication Date: 30/04/2023

DOIs:10.2018/SS/202304011 --:-- Research Paper / Article / Review

डिजिटल युग का हिंदी साहित्य पर प्रभाव

संजीव कुमार
शिक्षक सरकार। प्राथमिक विद्यालय बेला, तहसील नादौन जिला हमीरपुर (हि.प्र.), भारत
ईमेल - sanjeevmnature@gmail.com

सारांश : डिजिटल युग हिंदी साहित्य में एक ऐसा काल है जब डिजिटल प्रौद्योगिकी ने लेखन, प्रकाशन और अधिग्रहण के तरीके को पूरी तरह से बदल दिया है। डिजिटल उपकरणों ने लेखकों और प्रकाशकों के लिए नए माध्यम खोले हैं जिससे वे अपने लेखन को अधिक पाठकों तक पहुंचा सकते हैं। इसके साथ ही, डिजिटल प्रौद्योगिकी ने पाठकों को लेखन सामग्री अधिक सरलता से उपलब्ध कराया है और उन्हें अधिक विकल्प प्रदान किया है। इस प्रकार डिजिटल युग ने हिंदी साहित्य में बड़े संवाद का रूप रखा है ।

मुख्य बिंदु : डिजिटल प्रौद्योगिकी , डिजिटल उपकरणों , अधिग्रहण ।

1. प्रस्तावना :

डिजिटल युग प्रौद्योगिकी और सूचना के युग को संदर्भित करता है जहां डिजिटल प्रौद्योगिकी के उपयोग ने हमारे जीने, काम करने और संवाद करने के तरीके को बदल दिया है। यह स्मार्टफोन, कंप्यूटर और इंटरनेट जैसे डिजिटल उपकरणों और प्रौद्योगिकियों के व्यापक उपयोग की विशेषता है, जिसने हमारे द्वारा जानकारी तक पहुंचने और साझा करने, दूसरों के साथ जुड़ने और व्यापार करने के तरीके में क्रांति ला दी है। डिजिटल युग का संस्कृति, कला और साहित्य सहित आधुनिक समाज के वस्तुतः हर पहलू पर गहरा प्रभाव पड़ा है।

डिजिटल युग ने साहित्य और संस्कृति सहित जीवन के विभिन्न पहलुओं में महत्वपूर्ण बदलाव लाए हैं। हिंदी साहित्य के संदर्भ में, डिजिटल युग का साहित्यिक कार्यों के निर्माण, वितरण और उपभोग के तरीके पर गहरा प्रभाव पड़ा है। डिजिटल युग में जिस तरह से हिन्दी साहित्य लिखा, वितरित और उपभोग किया जा रहा है, लेखकों और प्रकाशकों के लिए दर्शकों तक पहुँचने के नए रास्ते खोल दिए हैं, और उन्होंने पाठकों को साहित्य तक पहुँचने और उससे जुड़ने के अधिक विकल्प प्रदान किए हैं।

डिजिटल तकनीक ने सूचना तक पहुँचने, बनाने और साझा करने के तरीके में क्रांति ला दी है और साहित्य सहित लगभग हर उद्योग पर इसका महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। डिजिटल प्रौद्योगिकी के उदय ने लेखकों, प्रकाशकों और पाठकों के लिए एक दूसरे के साथ बातचीत करने के नए अवसर पैदा किए हैं और साहित्य के उत्पादन, वितरण और उपभोग के तरीके को बदल दिया है। हिंदी साहित्य पर डिजिटल युग के सबसे महत्वपूर्ण प्रभावों में से एक पारंपरिक प्रिंट प्रकाशन से डिजिटल प्रकाशन में बदलाव है। ई-पुस्तकों और ई-पाठकों के आगमन के साथ, पाठक अब कभी भी और कहीं भी हिंदी साहित्य का उपयोग कर सकते हैं। इससे न केवल हिंदी साहित्य अधिक सुलभ हुआ है बल्कि हिंदी भाषी क्षेत्रों की पारंपरिक सीमाओं से परे हिंदी साहित्य की पहुंच भी बढ़ी है।

जिटल प्रकाशन के अलावा, डिजिटल युग ने हिंदी लेखकों के लिए अपने काम को बढ़ावा देने और सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से नए दर्शकों तक पहुंचने के नए अवसर भी खोले हैं। फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म हिंदी लेखकों के लिए पाठकों से जुड़ने, उनके काम को बढ़ावा देने और प्रतिक्रिया प्राप्त करने के शक्तिशाली साधन बन गए हैं।

इसके अलावा, डिजिटल युग ने हिंदी साहित्य के नए रूपों, जैसे डिजिटल कविता और इंटरैक्टिव स्टोरीटेलिंग के उद्भव को भी सक्षम किया है, जो पाठकों के लिए आकर्षक साहित्यिक अनुभव बनाने के लिए डिजिटल मीडिया की अनूठी विशेषताओं का उपयोग करते हैं।

हालाँकि, डिजिटल युग हिंदी साहित्य के लिए अपनी चुनौतियाँ भी लाया है। सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक फेक न्यूज और गलत सूचनाओं का प्रसार है, जो हिंदी साहित्य और उसके लेखकों की विश्वसनीयता को नुकसान पहुंचा सकता है। इसके अतिरिक्त, डिजिटल क्षेत्र में अंग्रेजी का बढ़ता वर्चस्व हिंदी साहित्य के लिए व्यापक दर्शकों तक पहुंचना मुश्किल बना सकता है।

2. सकारात्मक प्रभाव:

- हिंदी साहित्य पर डिजिटल युग का सबसे महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव प्रकाशन का लोकतंत्रीकरण रहा है। डिजिटल प्लेटफॉर्म ने लेखकों के लिए स्वयं प्रकाशन करना और छोटे प्रकाशकों के लिए बड़े-प्रकाशन गृहों के साथ प्रतिस्पर्धा करना आसान बना दिया है। इसके परिणामस्वरूप हिंदी साहित्य में स्वरों और दृष्टिकोणों की एक अधिक विविध श्रेणी बन गई है।

- डिजिटल तकनीकों ने पाठकों के लिए उनके स्थान या भाषा प्रवीणता की परवाह किए बिना हिंदी साहित्य तक पहुंचना आसान बना दिया है। ईबुक्स-, ऑडियो बुक्स और ऑनलाइन पत्रिकाओं ने हिंदी साहित्य को वैश्विक दर्शकों तक पहुंचाना संभव बना दिया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने पाठकों को लेखकों और प्रकाशकों के साथ जुड़ने, प्रतिक्रिया प्रदान करने और समुदाय की भावना को बढ़ावा देने में सक्षम बनाया है।

3. नकारात्मक प्रभाव:

- डिजिटल युग ने जहां हिंदी साहित्य में कई सकारात्मक बदलाव लाए हैं, वहीं इसके कुछ नकारात्मक प्रभाव भी पड़े हैं। स्वप्रकाशन और डिजिटल वितरण की आसानी के परिणामस्वरूप कम गुणवत्ता वाली सामग्री की बाढ़ आ गई है-, जिससे पाठकों के लिए ढेर के बीच गुणवत्तापूर्ण साहित्य खोजना कठिन हो गया है।

- डिजिटल तकनीकों ने पारंपरिक प्रकाशन उद्योग को भी बाधित कर दिया है, जिससे कई लोगों की नौकरी छूट गई है और बुक स्टोर्स बंद हो गए हैं। इसने कई लेखकों, संपादकों और पुस्तक विक्रेताओं की आजीविका को प्रभावित किया है।

- इसके अतिरिक्त, डिजिटल तकनीकों के प्रसार से पढ़ने की आदतों में बदलाव आया है, कई पाठक छोटे, छोटे आकार की सामग्री को पसंद करते हैं। इससे उपन्यास और गैरकाल्पनिक पुस्तकों जैसे लंबे प्रारूप वाले साहित्य की - लोकप्रियता में गिरावट आई है।

4. इनोवेशन के दौर में मातृभाषा :

इंटरनेट और तकनीक के माध्यम से साहित्य को रंगत देने वालों में अकेले मनीष ही शामिल नहीं हैं। अच्छा साहित्य पढ़ने-संसार उपलब्ध कराने के अनेक सार्थक प्रयास हुए हैं-लिखने के शौकीनों की मनपसंद का रचना, जिसके लिए साहित्य के मुरीदों को पुस्तकालयों के चक्कर नहीं लगाने पड़ते। ये लोग साहित्य की परंपरागत धारा से नहीं जुड़े, फिर भी इन साहित्य प्रेमियों ने कविता और अन्य विधाओं के साहित्य को एक सहज उपलब्ध छतरी के नीचे लाने का सार्थक प्रयास किया। भूमंडलीकरण के दौर में सिमटी दुनिया में आज साहित्य के अनाम योद्धाओं के प्रयास से विपुल सहित्य आज इंटरनेट व सोशल मीडिया पर उपलब्ध है। आप मनपसंद कवि की कविता सुन व देख सकते हैं। यहां तक कि बाल पाठकों को रोचक तरीके से कविता पढ़ाना और सिखाना आसान हो गया है। मोबाइल एप और इंटरनेट के जरिये ये और आसान हुआ है ।

बदलाव के दौर में आज हिंदी साहित्य का चेहरा नयी रंगत लिये हुए आशावाद का संचार कर रहा है। इस नयी जमीन पर हिंदी ने अपने पंखों को विस्तार दिया है। साहित्य पर केंद्रित अनेक वेबसाइट्स और ब्लॉग आज बेहद लोकप्रिय हैं। इनमें कविता कोष, हिंदी समयकॉम तथा कुछ संस्थागत प्रयास शामिल हैं., जिन्होंने कविता पढ़ने के अंदाज को बदला है। 'कविता कोष' में हजारों कविताएं, हजारों कवियों के पेज, देशीविदेशी अनुवादित कविताओं को एक जगह पढ़ने का सुकून मिलता है-, जिसका श्रेय किसी साहित्यकार को नहीं बल्कि आईटी प्रोफेशनल और अपने जुनून के लिए विदेश से लौटे ललित कुमार को है। कभी अपने शौक के लिए इंटरनेट पर कविताएं तलाशने का जुनून आज एक बड़े सार्थक लक्ष्य में तबदील हो चुका है। इन्हें एक जगह एकत्र करने की कोशिश कालांतर कविताओं के विस्तृत संकलन में बदल गई।इंटरनेट के जरिये साहित्य को एक छतरी तले एकत्र करने के जहां व्यक्तिगत प्रयास हुए, वहीं कतिपय संस्थागत प्रयासों के भी सार्थक परिणाम सामने आये। महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की साइट समय डॉट कॉम पर साहित्य की तमाम विधाओं का सुरुचिपूर्ण संग्रह उपलब्ध है, जिसमें कविता, निबंध, उपन्यास, पत्र, आलोचना आदि विधाओं का व्यापक संकलन उपलब्ध है। अनेक रचनाकारों का विस्तृत रचना संचयन विद्यमान है। इस तरह इन वेबसाइटों के अलावा तमाम ब्लॉग साहित्य रसिकों की साहित्य की क्षुधा शांत कर रहे हैं। बदलते वक्त में सूचनातकनीक की उ-न्नति के साथ साहित्य की जुगलबंदी ने हिंदी भाषा और साहित्य को समृद्ध ही किया है, जिसका दरवाजा आपके स्मार्टफोन में खुलता है।इस मुहिम का सुखद पहलू यह है कि आज हिंदी के लेखक व पाठक परंपरागत धारा से नहीं आ रहे हैं। वे तकनीकी संस्थानों,

प्रबंध संस्थानों व अन्य पेशों से आ रहे हैं। यहीं से नया पाठक वर्ग भी उभरा है। वह तकनीक का बेहतर ढंग से इस्तेमाल कर रहा है। इतना ही नहीं, रचनाओं की विषयवस्तु व उसके आकार में भी बदलाव महसूस किया जा रहा है। फेसबुक व ट्विटर में शब्दों - की सीमाओं ने रचनाओं को छोटे प्रारूप में ढाला है।जहां पाठक रचना को पढ़कर तुरंत प्रतिक्रिया भी देता है। 'जगरनॉट' जैसे एप मोबाइल पर ईबुक उपलब्ध करा रहे हैं।नये दौर के लेखकों ने हिंदी को स्मार्ट बनाने की कोशिश की है। इस युगांतरकारी बदलाव - फुरत हु-पाठक का संवाद तुरत-से नये पाठक वर्ग का विस्तार हुआ है और लेखकआ है। छोटी पत्रिकाओं के जरिये होने वाला विमर्श अब सोशल मीडिया पर विद्यमान है। किस्सागोई की नयी रोचक शैली विकसित हुई है

5. विभिन्न प्लेटफार्मों पर साहित्य :

इंटरनेट के जरिये विभिन्न प्लेटफार्मों पर रचा जा रहा साहित्य सरलसहज-, प्रभावपूर्ण व रोचक अंदाज में नयी पीढ़ी के पाठकों तक पहुंचा है। नये मिजाज के विषयों का चयन, लीक तोड़ती शैली तथा जीवन राग को अपने अंदाज में अभिव्यक्त करने का जुनून देखते ही बनता है। नये प्रयोगों के जरिये हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय पाठकों से जोड़ने का अवसर मिला है। पांडित्यपूर्ण शब्द आडम्बरों से मुक्त भाषा में प्रेमजीवन राग की बेलाग अभिव्यक्ति नजर आती है जो साहित्य के प्रति दुराग्रहों की लीक को तोड़ती - है। खास बात यह है कि नये दौर के हिंदी साहित्य में समकालीन समाज का आईना नजर आता है जो इस मिथ को तोड़ता है कि हिंदी साहित्य के पाठक सिमट रहे हैं। इस माध्यम से नया गतिशील पाठक वर्ग सामने आ रहा है जो जीवन की जीत के साथ जीवन की हार को विषयसरल भाषा और संवेदना के सूत्र वाक्यों से नयी -वस्तु बनाकर कारकों की पड़ताल करता नजर आता है। सहज-पीढ़ी का पाठक फिर साहित्य की ओर लौट रहा है, जिसको साहित्य के दिग्गज साहित्य से कटा मानकर चल रहे थे।उल्लेखनीय यह भी है कि हिंदी अखबारों की वेबसाइटों ने नये हिंदी पाठकों को जोड़ा है। रोज़ाना लाखों हिट इन वेबसाइटों को मिल रहे हैं, जिनके मुकाबले ब्लॉगों व सामान्य वेबसाइटों का दायरा हजारों तक सिमटा रहता है। हिंदी की टाइपिंग तकनीक में सरलता तथा स्पीच तकनीक के विकास ने लिखने के तौरसहज विस्तृत शब्दकोश की है ताकि नयी -तरीकों को आसान बनाया है। जरूरत अब सरल-पीढ़ी के पाठक शब्दों की जटिलता में उलझकर हिंदी से न छिटकें।

6. निष्कर्ष :

कुल मिलाकर, डिजिटल युग हिंदी साहित्य के लिए अवसर और चुनौतियां दोनों लेकर आया है। यह हिंदी लेखकों, प्रकाशकों और पाठकों पर निर्भर है कि वे इन परिवर्तनों को नेविगेट करें और डिजिटल युग की नई वास्तविकताओं को अपनाएं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि हिंदी साहित्य फलताफूलता और विकसित होता रहे।- डिजिटल युग ने जहां हिंदी साहित्य में कई सकारात्मक बदलाव लाए हैं, वहीं इसके कुछ नकारात्मक प्रभाव भी पड़े हैं। स्वप्रकाशन और डिजिटल वितरण की आसानी के - परिणामस्वरूप कम गुणवत्ता वाली सामग्री की बाढ़ आ गई है, जिससे पाठकों के लिए ढेर के बीच गुणवत्तापूर्ण साहित्य खोजना कठिन हो गया है

संदर्भ :

1. https://the-next.eliterature.org/
2. *"होम| इलेक्ट्रॉनिक साहित्य निर्देशिका" / निर्देशिका.eliterature.org / 2022-10-17 को पुनःप्राप्त /*
3. हिंदी सेवी सन्मान योजना
4. "शिक्षा के क्षेत्र में प्रौद्यो गिकी का उपयोग". मूल
5. इलेक्ट्रॉनिक्स इंग्रजी-हिंदी शब्दसंग्रह
6. ट्रिब्यून
7. *https://hi.quora.com*